ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 233-234

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

आधुनिक चित्रकला का उद्भव एवं विकास

गुलाबधर

सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

Received- 30.11. 2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: gulabdharjrhu@gmail.com

सारांश : *भारतीय चित्रकला की वर्तमान परिस्थितियों पर विश्व की चित्रकलाओं का प्रभाव स्पष्ट है। इसलिए अने देश की आधुनिक एवं समसामायिक चित्रकलाओं का अध्ययन करने के लिए उन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करना भी अपेक्षित है, जिनसे विश्व का कला–धरातल प्रभावित रहा। पश्चिम के आधुनिक दीक्षाशास्त्रियों ने कला के उद्भव और विकास पर जो मान्तव्य प्रकट किये हैं वे एक जैसे नहीं हैं। उनमें जो अधिक वैज्ञानिक, व्यवहारिक और मान्यमत हैं उनके अनुसार आधुनिक कला के मूल में औद्योगिक क्रान्ति और संचार के विकसित साधनों को कारण माना गया है। विश्व के समस्त विकसित देशों पर इस क्रान्ति का इतना प्रभाव पड़ा कि वहाँ का सम्पूर्ण जन–जीवन, साहित्य, संस्कृति और कला आदि के विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ आमूल परिवर्तन हुआ। दूसरे महायुद्ध के बाद अधिकतर जनता पर आर्थिक प्रभुत्व का जो भारी बोझ लद गया था उसी प्रतिक्रिया में इस क्रान्ति का जन्म हुआ जिसका स्वागत एवं प्रकाशन वहाँ के लेखकों व पत्रकारों और कलाकारों ने किया।1*

कुंजी शब्द– समसामयिक, चित्रकला, कला–धरातल, उद्भव, विकास, आधुनिक कला, औद्योगिक क्रान्ति, आमूल।

भारत के बुद्धिजीवी एवं कलाकार वर्ग ने भी इस क्रान्ति का स्वागत किया किन्तु पराधीनता के कारण उसकी प्रतिक्रियायें जितनी स्पष्टता और तीव्रता से प्रकाश में आनी चाहिए थी वैसी नहीं आ सकी। भारत में इस आर्थिक प्रभुत्व का विरोध हुआ। राजनीति के माध्यम से जिसके उन्नायक एवं अग्रदूत थे महात्मा गाँधी। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का सूत्रपात लगभग वर्तमान शताब्दी के आरम्भ के साथ हुआ। इतने कम समय में उसने जो प्रगति की है उसका श्रेय वर्तमान पीढ़ी के उन सभी कलाकारों को प्राप्त है, जिन्होंने परिस्थितियों की चिन्ता किये बिना अपनी साधना को अविरत रूप में बनाये रखा। ये कलाकार जैसा कि उनकी विद्याओं से स्पष्ट है। विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित है, यद्यपि आधुनिक चित्रकला के तीन प्रमुख स्कूल माने जाते हैं। कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली किन्तु उनके आधार पर चित्रकारों का वर्ग विभाजन करना समुचित नहीं जान पड़ता।2

सामान्यतः पहले वर्ग के अन्तर्गत उन प्रवृत्तियों को रखा जा सकता है जिन्हें टैगोर बन्धुओं ने सृष्ट किया और कुछ समय बाद जो बंगाल स्कूल के नाम से देश भर में विख्यात हुई। यद्यपि बंगाल स्कूल की परम्परा से निकले हुए कुछ कलाकारों ने अपना विकास दूसरी ही दिशा में किया फिर भी बंगाल स्कूल की परम्परा का अपना विशिष्ट स्थान है। अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, गगनेन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बोस, शैलोज मुकर्जी, धनराज भगत और देवी प्रसाद राम चौधरी इस परम्परा के पोशक एवं समर्थक आचार्य कहे जा सकते हैं।

दूसरे वर्ग में उन चित्रकारों को रखा जा सकता है, जिन्होंने बंगाल स्कूल की परम्परा को अपनाने की अपेक्षा अपनी नयी अनुभूतियों के आधार पर यह सिद्ध किया किया कि बंगाल स्कूल की परम्परा पाश्चात्य मानमूल्यों पर आधारित है और उसकी अपेक्षा अपने देश की संस्कृति एवं अपने शास्त्रीय संविधानों में रसानुभूति के ऐसे तत्व समन्वित हैं।3 जिनको ग्रहण कर अपनी ही रूचियों के अनुसार अपनी कला का आधुनिकतम विकास संभव हो सकता है। इस प्रकार के चित्रकारों में यामिनीराय और अमृताशेरगिल का नाम मुख्य है। यहाँ तक की बंगाल स्कूल के जन्मदाता आचार्य अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के कुछ चित्रों में इस वास्तविकता को स्वीकार किया गया है। कनु देसाई के राष्ट्रीय स्वर में और रविशंकर रावल की संवैधानिक दृष्टि में यही भावना अभिव्यंजित है।

तीसरे वर्ग में उन प्रवृत्तियों को रखा जा सकता है जिनका प्रादुर्भाव स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हुआ। भारत के स्वाधीन होने के पूर्व ही यद्यपि चित्रकला के क्षेत्र में स्वतंत्र चिन्तन का नमोन्मेष और राष्ट्रीय चेतना का उदय हो चुका था फिर भी उसका पूर्ण प्रभावशाली रूप स्वाधीनता के बाद रची गयी कलाकृतियों में ही स्पष्ट हुआ स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व अवनीन्द्र बाबू इस राष्ट्रप्रेम के कारण चीनी, जापानी, फारसी, राजपूत, और मुगल शैलियों की ओर आकर्षित हुए थे। नन्दलाल बसु की कला में महात्मा गाँधी के प्रभाव से राष्ट्रीय जागृति का आवाहन था। कनुदेसाई ने आदि से अन्त तक इसी राष्ट्रप्रेम को अपनी कला साधना का ईष्ट बनाये रखा।

कलकत्ता के सरकारी आर्ट स्कूल से निकले हुए विद्यार्थी जब देश के चारों ओर फैले तो उनकी तूलिका में

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

एक ही स्वर मुखरित था। वह स्वर था राष्ट्रप्रेम का। उसमें दुःख उत्पीड़न, घृणा, विषाद और बहिष्कार की भावना में अभिव्यक्ति था। आरम्भ में कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बम्बई और गुजरात आदि देश के विभिन्न अंचलों में बिखरे हुए अनेक कलाकारों ने इसी दृष्टिकोण का स्वागत समर्थन किया।

किन्तु कला में यह राष्ट्रप्रेम की भावना स्थायी नहीं था क्योंकि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद राष्ट्रप्रेम के समर्थक कलाकार दूसरी ही दिशाओं की ओर अग्रसर हुए। उनमें सर्वाधिक प्रभावशाली वर्ग वह है जो कला को देश–काल की सीमाओं से निकालकर सार्वदेशिक और सर्वकालीन समझता है।4

समसामयिक चित्रकारों का यह चौथा वर्ग आज अन्तर्राष्ट्रीय कला मंच पर अधिष्ठित होकर देश का प्रतिनिधित्व कर रहा है। इस वर्ग का प्रेरणा केन्द्र पेरिस है, जिसको आज विश्व का सर्वश्रेष्ठ कलातीर्थ माना जाता है। भारत में इस शैली के सर्वप्रथम चित्रकार विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर थे। यद्यपि उनके चित्रों में काव्यात्मक स्वर की मुख्यता थी फिर भी उनके चित्रों की सबसे बड़ी विशेषता रूप निरप्रेक्षता थी। इसी रूप निरप्रेक्षता के कारण कलकत्ता में आयोजित प्रदर्शनी में उनके चित्रों की कड़ी आलोचना हुई। वस्तुतः उसका एकमात्र कारण यही था कि उन पर पेरिस के शैली–संविधानों का प्रभाव था।

इस वर्ग के चित्रकारों की नामवली लम्बी है। यद्यपि इस वर्ग के चित्रकारों का प्रेरणा केन्द्र पेरिस रहा है किन्तु उनमें से अधिकतर आज निजी संवैधानिक दृष्टि से नये स्वरूपों की दृष्टि कर रहे हैं। इन चित्रकारों में कँवलकृष्ण, वीरेन्द्र, श्रीकृष्ण खन्ना, मोहन सामन्त, जार्जकीट, कुलकर्णी, हुसैन, राजकुमार, रजा, सतीशचन्द्र गुजराल, शान्ती देव, न्यूटन सूजा, तैयब मेहता, किरण सिन्हा, आरा, पदमसी, सुब्रमण्यम, हरकिशन लाल और बेन्द्रे का नाम प्रमुख है। रामकिंकर, हेब्बर, विनोद बिहारी मुखर्जी, मागो, चावड़ा, दिनकर कौशिक, ज्योतिष, भट्टाचार्य, गोद गायतोडे, जगदीश मित्तल, अजीत चक्रवर्ती तथा द्विजेन सेन आदि चित्रकारों को समन्वयवादी विचारधारा का कलाकार माना जा सकता है। जिनसे कलाकार और कला दोनों एक निश्चित उद्देश्य खोजने में कठिनाई हो रही है।5 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कलाकारों के आश्रयस्थान क्षीण हो गये थे और भारतीय चित्रकला की मुगल राजपूत तथा पहाड़ी आदि प्रमुख शाखायें तथा उनकी उपशाखायें विलुप्त हो चुकी थी। अंग्रेजों के भारत में प्रवेश करने से पूर्व भी कुछ भारतीय चित्रकार यूरोपीय शैली को अपना चुके थे। सारे देश पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो जाने के बाद उनकी संस्कृति ने यहाँ के कला धरातल को धीरे–धीरे अपने प्रभाव के अधीन कर दिया था।6 हमें अब कहीं से कुछ लेने की जरूरत नहीं है अब देशी या यूरोपीय होने की कोई जरूरत नहीं है। ये मुझे अब अप्रासांगिक हो गये हैं। भारतीय कला, फिल्म, नृत्य, नाटक यह पूरा संरचना–संसार एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। एक सच्चाई है कि कला के क्षेत्र में भारत की सबसे अधिक अपेक्षा हुई है। कारण कई हैं जिन्हें खोजा और जाँचा जा सकता है। जिस तरह से कभी–कभी फिल्म में लेशबैक की तकनीक का इस्तेमाल होता है कुछ उसी तरह से मैंने पश्चिम में आधुनिक कला से सौ सालों की जाँच से पहले 1987 के कला बाजार में बॉन–गॉग की पेन्टिंग की बहुचर्चित की निलामी से शुरूआत की है और फिर 1888 की दुनिया से जाना उचित समझा है। आधुनिक चित्रकला के जन्म का इतिहास बंगाल स्कूल की स्थापना से आरम्भ होता है।

आधुनिक भारतीय चित्रकला के लिए बंगाल स्कूल का बड़ा महत्व है। आधुनिक चित्रकला की वह आधारभूमि है। जिसको हम बंगाल स्कूल कहते हैं वह वस्तुतः परम्परागत भारतीय चित्रकला का पुनर्जागरण का एक नवीनीकरण था। उसके जीवन काल में इस प्रकार के परिवर्तन समय–समय पर होते रहे जैसा की उसके इतिहास से स्पष्ट है। हैबेल साहब के इस मन्तव्य से इस सत्य की सार्थता का और भी स्पष्टीकरण हो जाता है। उन्होंने लिखा है इस फैलती हुई मानसिक और शासन सम्बन्धी अव्यवस्था के पीछे भारत में अब भी प्रार्थना भारतीय संस्कृति पर आधारित कला की एक जीवित और मौलिक परम्परा है जो यूरोप की आधुनिक अकादमियों और कला संस्थानों के संचित ज्ञान की अपेक्षा अधिक सम्पन्न और शक्तिशाली है। यह परम्परा केवल उस आध्यात्मिक प्रबोध के प्रतिक्षा कर रही है जिससे कि उसकी पुरानी सृजनशील प्रवृत्तियाँ जागृत हो उठे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अविनाश बहादुर वर्मा– आधुनिक भारतीय चित्रकला का , पृ0सं0–307
2. अजित मुखर्जी– मॉडर्न आर्ट इन इंडिया, पृ0सं0– 15–16
3. विनोद भारद्वाज– बृहद आधुनिक कला कोश, पृ0सं0– 12–15
4. वाचस्पति गैरोलन– भारतीय चित्रकला, पृ0सं0– 251, 53
5. अषोक– पष्चिम की चित्रकला, पृ0सं0– 218–19
6. रवि साखालकर– आधुनिक चित्रकला का इतिहास, पृ0सं0–14–15

*****